झारखंड राज्य के महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति की विवेचना
(कोडरमा जिले के विशेष संदर्भ में 2000 ई. से 2020 ई. तक)

वाई.बी.एन. विश्वविद्यालय, रांची
की पीएच.डी.उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबंध

शोध-प्रज्ञ
कविता कुमारी
पंजीयनसंख्या-YBNU2002874

शोध- निदेशक
डॉ० आलोक कुमार
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग
वाई.बी.एन. विश्वविद्यालय, रांची

झारखंड राज्य के महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति की विवेचना

(कोडरमा जिले के विशेष सन्दर्भ में – 2000 ई. – 2020 ई. तक)

भूमिका

झारखंड राज्य, जो 15 नवंबर 2000 में बिहार से अलग होकर भारत के 28वें राज्य के रूप में बना, खनिज संसाधनों से समृद्ध है और इसकी आबादी का एक बड़ा हिस्सा आदिवासी समुदायों से संबंधित है। इस राज्य में विभिन्न जनजातीय, गैरजनजातीय- समुदायों और सांस्कृतिक समूहों का समागम है, जिससे इसकी सामाजिक संरचना जटिल हो जाती है। झारखंड अपनी सांस्कृतिक विविधता और प्राकृतिक संसाधनों के लिए जाना जाता है। यहाँ की जनसंख्या में विभिन्न जनजातीय और गैरजनजातीय समुदाय शामिल हैं-, जो सामाजिक संरचना को जटिल बनाते हैं और सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण से इसके विकास को प्रभावित करते हैं।

इस राज्य की सामाजिक संरचना में विभिन्न जातीय और सामाजिक समूहों का समावेश है, जो महिलाओं की सामाजिकआर्थिक स्थिति को प्रभावित करते हैं। कोडरमा - जिला, जो झारखंड के केंद्र में स्थित है, यहाँ की महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण करने के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ प्रस्तुत करती है।

झारखंड राज्य, जिसे 2000 में भारत के 28वें राज्य के रूप में स्थापित किया गया, अपनी सांस्कृतिक विविधता और प्राकृतिक संसाधनों के लिए जाना जाता है। कोडरमा जिला, जो झारखंड के मध्य भाग में स्थित है, यहां की महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण करने के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ प्रस्तुत करती है। झारखंड, भारत के पूर्वी हिस्से में स्थित एक खनिज समृद्ध राज्य है, जहाँ आदिवासी और गैर-आदिवासी जनसंख्या का मेल देखा जाता है। राज्य की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से खनन, कृषि, और छोटे पैमाने के उद्योगों पर आधारित है। झारखंड में महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति राज्य की समग्र विकास प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

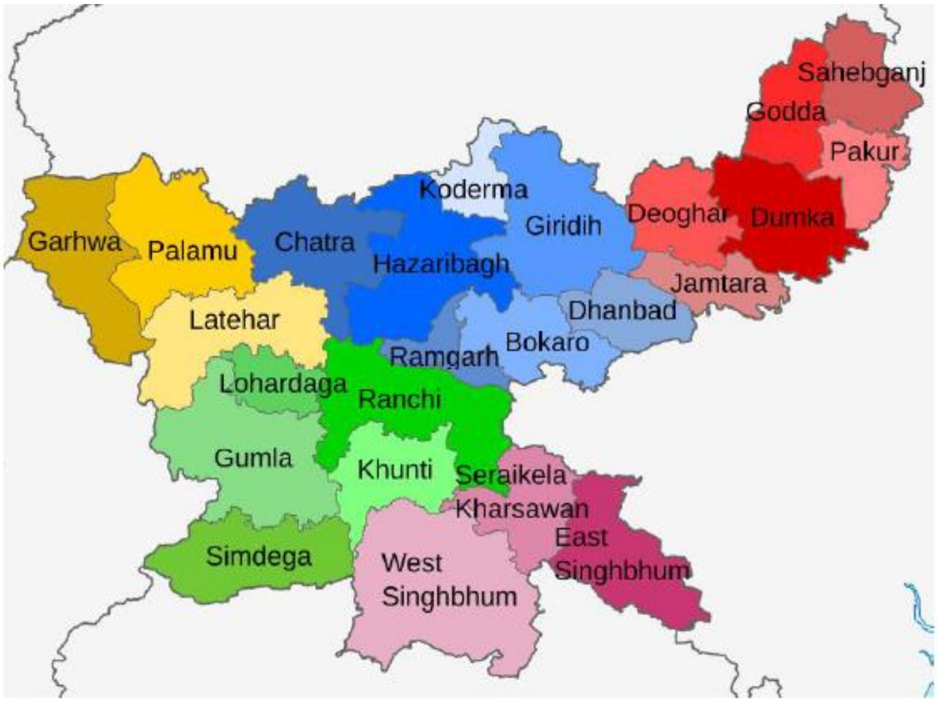
Sahebganj
Godda
Pakur
Koderma
Giridih
Deoghar
Dumka
Garhwa
Palamu
Chatra
Hazaribagh
Jamtara
Dhanbad
Latehar
Bokaro
Ramgarh
Lohardaga
Ranchi
Gumla
Khunti
Seraikela
Kharsawan
East
Singhbhum
Simdega
West
Singhbhum

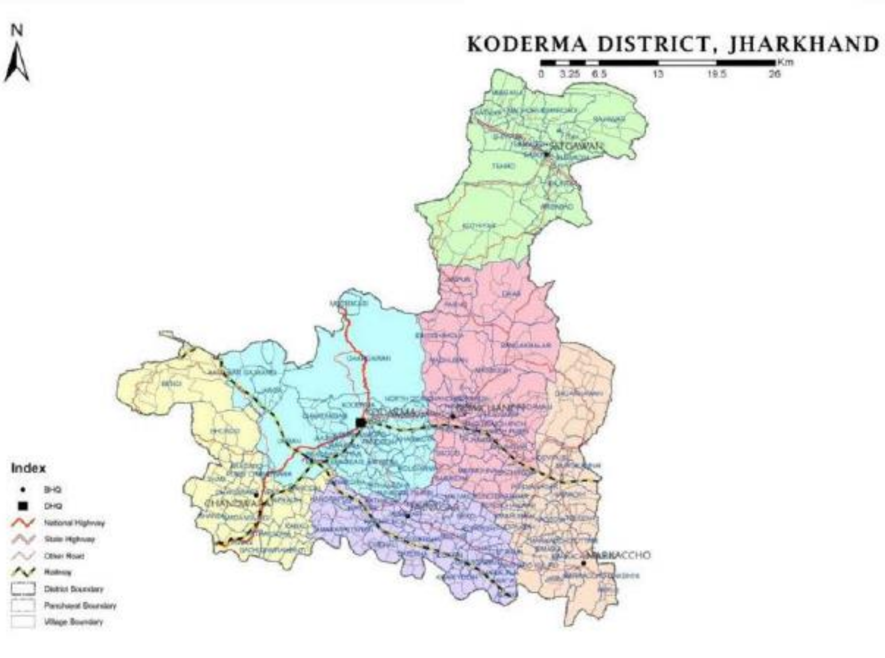
N
KODERMA DISTRICT, JHARKHAND
0 3.25 6.5 13 19.5 26 Km
Index

कोडरमा जिला, जो मिका (अभ्रक) खनन के लिए प्रसिद्ध है, इस परिप्रेक्ष्य में एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र बनता है, क्योंकि यहाँ की अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना सीधे तौर पर महिलाओं के जीवन पर प्रभाव डालती है।

इस संदर्भ में, झारखंड की महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर विचार करना महत्वपूर्ण है, विशेषकर कोडरमा जिले के परिप्रेक्ष्य में, जहाँ खनन उद्योग और कृषि महिलाओं के जीवन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। कोडरमा जिला अपने मिका (अभ्रक) खनन के लिए प्रसिद्ध है, जो महिलाओं की अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना पर गहरा प्रभाव डालता है।

2000 से 2020 के बीच, कोडरमा में महिलाओं की स्थिति में कई बदलाव देखने को मिले हैं। इस अवधि में, महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई है, लेकिन अभी भी कई चुनौतियाँ विद्यमान हैं।

यह अध्ययन कोडरमा जिले की महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का समग्र विश्लेषण करेगा। इसमें यह देखा जाएगा कि पिछले दो दशकों में महिलाएँ कैसे अपने अधिकारों और संसाधनों के लिए संघर्ष कर रही हैं, साथ ही उनके सामने आने वाली चुनौतियों का भी अवलोकन किया जाएगा। इसके माध्यम से, हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि समाज में महिलाओं की भागीदारी को कैसे बढ़ावा दिया जा सकता है और उनकी स्थिति को बेहतर बनाने के लिए किन रणनीतियों की आवश्यकता है।

इस शोध के माध्यम से, हम यह समझने की कोशिश करेंगे कि कैसे झारखंड में महिलाओं की स्थिति को सशक्त बनाते हुए, उन्हें समाज के विकास में सक्रिय भागीदार बनाया जा सकता है। इस विषय पर विस्तृत अध्ययन न केवल अकादमिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि नीति-निर्माताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए भी दिशा-निर्देश प्रदान करेगा।

हालांकि, इस प्रगति के बावजूद, कई महिलाएँ अभी भी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही हैं। लैंगिक भेदभाव, पारंपरिक सामाजिक मान्यताएँ, और आर्थिक असमानताएँ उनके विकास में बाधक बनी हुई हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक

सीमित पहुँच, और रोजगार के अवसरों की कमी भी महिलाओं के सशक्तिकरण में बाधाएँ उत्पन्न करती हैं।

इस शोध का उद्देश्य न केवल कोडरमा जिले की महिलाओं की स्थिति का गहन अवलोकन करना है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि उनके अधिकारों और संसाधनों की रक्षा की जाए, ताकि वे समाज के विकास में सक्रिय भागीदार बन सकें। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, और अकादमिक समुदाय के लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

यह शोध न केवल स्थानीय संदर्भ में महत्वपूर्ण है, बल्कि झारखंड की महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए व्यापक नीतियों के निर्माण में भी सहायक होगा। इस प्रकार, यह अध्ययन महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए ठोस सुझाव और दिशा-निर्देश प्रदान करने का प्रयास करेगा।

प्रस्तावित शोध प्रविधि:

शोध प्रविधि में आगमन और निगमन विधियाँ शोध के विभिन्न चरणों को संचालित करने के लिए उपयोग में लाई जाती हैं। ये विधियाँ शोध की योजना तैयार करने, आंकड़े को इकट्ठा करने, जांच करने, विश्लेषण करने, नतीजों को प्रस्तुत करने और अंत में प्रतिवेदन लिखने जैसे प्रक्रियाओं को संचालित करने में मदद करेगी।

आगमन विधि:

शोध योजना: शोध की शुरुआती चरण में, मैं शोध योजना तैयार करूँगी, जिसमें शोध के मुख्य उद्देश्य, ध्येय, प्रश्न, परिकल्पना और कार्यप्रणाली शामिल होंगी ।

आंकड़े संग्रह: इस चरण में, मैं अपने उद्देश्य के अनुसार आंकड़े को इकट्ठा करूँगी । यह आंकड़े विभिन्न स्रोतों से आ सकता है, जैसे सर्वेक्षण, प्रयोग, अवलोकन अथवा साक्षात्कार ।

आंकड़े विश्लेषण: इस चरण में, मैं आंकड़े को विश्लेषण करूँगी ताकि अपने प्रश्नों का उत्तर ढूंढ सकूं। विश्लेषण विधियाँ आपके आंकड़े के प्रकार और अध्ययन के उद्देश्य पर निर्भर करती हैं।

परिणामों की प्रस्तुति: विश्लेषण के बाद, मैं अपने परिणामों को संकलित करूँगी और उन्हें विभिन्न रूपों में प्रस्तुत करूँगी, जैसे रिपोर्ट, अध्ययन, प्रस्तुति, लेख, आदि। मैं इसका भरपूर प्रयास करूँगी।

निगमन विधि:

निरीक्षण: शोध के अंतिम चरण में, मैं अपने परिणामों का निरीक्षण करूँगी और उनकी सत्यता, प्रभाव और परिणामों के अवलोकन के बारे में निर्णय लूँगी।

शोध प्रश्न

यह सर्वेक्षण सामाजिक और आर्थिक विकास में महिला उद्यमिता की भूमिका का विश्लेषण करने के लिए शोध कार्य का एक हिस्सा है। इस प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किए गए डेटा का उपयोग केवल शैक्षणिक उद्देश्य के लिए किया जाएगा। आपसे अनुरोध है कि कृपया आवश्यक जानकारी प्रदान करें:-

(क) सामाजिक पृष्ठभूमि पर प्रश्न

1. कृपया अपनी आयु (वर्ष) बताएं:

 18 से 30 वर्ष

 31 से 40 वर्ष

 41 से 50 वर्ष

 50 वर्ष से अधिक

2. कृपया अपनी वैवाहिक स्थिति बताएं

 विवाहित

 अविवाहित

 विधवा/तलाकशुदा

3. कृपया उद्यमी का लिंग बताएं:

 पुरुष

 महिला

4. कृपया अपना व्यवसाय बताएं:

 सूक्ष्म उद्योग

 लघु उद्योग

 मध्यम उद्योग

5. कृपया अपनी योग्यता बताएं:

 उच्चतर माध्यमिक

 स्नातक

 स्नातकोत्तर

 डिप्लोमा

 निरक्षर

6. कृपया अपनी वार्षिक आय बताएं:

 कोई आय नहीं

 5 लाख से कम

▯ रु. 6,00,000 से रु. 10,00,000

▯ रु. 10,00,001 से 20,00,000 रु.

▯ > 20,00,001 रु.

7. कृपया अपने अनुभव के वर्ष बताएं?

▯ < 1 वर्ष

▯ 1 से 3 वर्ष

▯ 4 से 6 वर्ष

▯ 6 से 10 वर्ष

▯ > 10 वर्ष

8. किस सोशल नेटवर्क ने आपके व्यवसाय को बढ़ने में सहायता की है?

▯ सोशल मीडिया

▯ धर्म संगठन

▯ परिवार/मित्र

▯ एसोसिएशन/सहकारी

▯ अन्य

9. आपके अनुसार, कार्य वातावरण में उच्च आईसीटी कौशल और ज्ञान वाले लोग हैं:

▯ महिलाएँ

▯ पुरुष

▯ दोनों

10. क्या आप मानते हैं कि महिलाओं को प्रबंधकीय और निर्णय लेने वाले पदों तक पहुँचने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है?

 हाँ

 नहीं

11. 21वीं सदी में महिलाओं की रोजगार योग्यता के लिए किस तरह के कौशल आवश्यक हैं? · आईसीटी प्रबंधन कौशल

 व्यवसाय वास्तुकला कौशल

 व्यवसाय प्रक्रिया प्रबंधन कौशल

 डिजिटल मार्केटिंग कौशल

 डिजाइन कौशल

 सामाजिक व्यवसाय कौशल

 पारस्परिक कौशल

 टीम वर्क कौशल

 स्व-प्रबंधन कौशल

 योजना और आयोजन कौशल

 अन्य

अध्ययन के उद्देश्य

अगर मैं किसी इलाके की सामाजिक-आर्थिक जनसांख्यिकी में महिलाओं या महिला उद्यमशीलता गतिविधि की भूमिका के बारे में बात करती हूँ, तो 'सरकार की कल्याणकारी योजनाएँ' और 'विभिन्न उद्योगों द्वारा संचालित सीएसआर या एनजीओ' की अवधारणाएँ डिफ़ॉल्ट रूप से सामने आएंगी। प्रस्तावित अध्ययन किसी राज्य की स्थानीय अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमिता की भूमिका का विश्लेषण करेगा। इसके अलावा महिला

उद्यमिता के प्रभाव को किसी विशेष राज्य यानी झारखंड के किसी विशेष जिले तक सीमित किया जाएगा।

इस अध्ययन के उद्देश्य महिला उद्यमियों के विकास और एक टिकाऊ अर्थव्यवस्था और तर्कसंगत सामाजिक व्यवस्था बनाने में उनके योगदान के अध्ययन से लेकर एक व्यापक रेंज को कवर करते हैं। इस अध्ययन के लिए एक वर्णनात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है और एक विशिष्ट आबादी से चयनित नमूने को प्रशासित किया गया है जिसमें कोडरमा जिले के निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यवसायों और अधिकारियों में महिलाएं शामिल हैं। अध्ययन में सर्वेक्षण उपकरण के रूप में प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। सर्वेक्षण ने संकेत दिया है कि महिला उद्यमियों को अर्थव्यवस्था, सामाजिक प्रणाली और पारिस्थितिकी में टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए कैसे तैनात किया जा सकता है। यह अध्ययन अर्थव्यवस्था के विकास पर महिला उद्यमियों के प्रभाव का अवलोकन करके किया गया है। महिला उद्यमिता विकासशील देशों/राज्यों के लिए सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिक रूप से व्यापार में टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण साबित हुई है।

अध्ययन के उद्देश्यों को निम्नलिखित खंडों में विभाजित किया गया है:-

i. किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास में महिला उद्यमियों की भूमिका का पता लगाना

ii. किसी क्षेत्र के सामाजिक विकास में महिला उद्यमियों की भूमिका का पता लगाना

iii. किसी विशेष क्षेत्र की महिला उद्यमियों के उत्थान के लिए प्रमुख चालकों का पता लगाना

iv. महत्वपूर्ण योगदान देने की आगे की संभावनाओं की खोज करना स्थानीय अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमियों की भागीदारी

अध्ययन का दायरा

कोई भी अध्ययन अपने आप में अंत नहीं होता। यह हमेशा अध्ययनों के दूसरे सेट की शुरुआत देता है। यहाँ हमने झारखंड के कोडरमा जिले में ही सामाजिक और आर्थिक विकास में महिला उद्यमिता के प्रभाव का विश्लेषण किया है, जबकि अन्य जिलों/राज्यों में भी शोध किया जा सकता है। मैंने केवल चुनिंदा सरकारी कार्यालय स्रोतों और बहुत कम गैर सरकारी संगठनों या निजी खिलाड़ियों को ध्यान में रखा है। सामाजिक-आर्थिक विकास में महिलाओं और महिला उद्यमियों की भूमिका का पता लगाने के लिए, मैंने उत्तरदाताओं का उनके संबंधित क्षेत्रों, उनके ऑन-साइट प्लांट या ई-प्रश्नावली के माध्यम से व्यापक सर्वेक्षण किया है। अध्ययन विभिन्न श्रेणियों के लिए बहुत उपयोगी है: झारखंड राज्य के लिए यह अध्ययन सभी संबंधित सरकारी विभागों, बैंकिंग प्रणाली, गैर सरकारी संगठनों, विभिन्न उद्योगपतियों को गैर-पारंपरिक क्षेत्रों में अपना आधार बढ़ाने के लिए अवसर प्रदान करती है। यह झारखंड राज्य के सभी उद्योगपतियों के लिए विभिन्न सीएसआर परियोजनाओं की शुरुआत करके खुद को बहुत व्यापक बाजार में स्थापित करने के लिए एक नया द्वार खोलेगा।

उद्योगों के लिए

अध्ययन महिला उद्यमिता और उनकी विशिष्टताओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करती है, इसलिए इसे सीएसआर गतिविधियों के चयन के संदर्भ में उद्योगों के लिए उपयोगी सामग्री के रूप में लिया जा सकता है, खामियों को जानने के संदर्भ में, समाज में उनके प्रभाव को अधिकतम करने और स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान देने के लिए कौन सी गतिविधि चुनी जानी चाहिए।

अध्ययन विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में बहुत विस्तृत और संक्षिप्त ज्ञान भी प्रदान करती है जिसका उपयोग उद्योगों में उत्पाद तैयार करने के लिए संदर्भ के रूप में किया जा सकता है।

निवेशकों के लिए

वर्तमान में, इस अवधारणा के बारे में जागरूकता तुलनात्मक रूप से अधिक प्रचलित है, लेकिन गहन जागरूकता का अभाव है। कोई भी निवेशक अपने

व्यवसाय के विस्तार के लिए इस बाजार और विभिन्न उत्पादों को समझने के लिए इस अध्ययन का उपयोग कर सकता है।

छात्रों के लिए

इस अवधारणा के बारे में सब कुछ जानने के बाद, कोई भी छात्र इस क्षेत्र में एक शानदार करियर बना सकता है। यह अध्ययन महिला उद्यमिता की एक पुस्तिका के रूप में काम करेगा। इसके अलावा, निर्दिष्ट विशेषताओं पर बहुत कम अध्ययन किए गए हैं। प्रस्तावित अध्ययन के परिणाम समाज और इसके स्थानीय आर्थिक विकास में महिला उद्यमिता की भूमिका के बारे में शोधकर्ता के ज्ञान को बढ़ा सकते हैं।

विवरण निम्नलिखित तालिका में है:-

क्र० सं०	**अध्ययन के उद्देश्य**	**डेटा संग्रह के उपकरण**	**उत्तरदाताओं की संख्या**
I	किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास में महिला उद्यमियों की भूमिका का पता लगाना	संरचित प्रश्नावली और द्वितीयक स्रोतों के संदर्भ	१८६
II	किसी क्षेत्र के सामाजिक विकास में महिला उद्यमियों की भूमिका का पता लगाना	संरचित प्रश्नावली और द्वितीयक स्रोतों के संदर्भ	१८६
III	किसी विशेष क्षेत्र की महिला उद्यमियों के उत्थान के लिए प्रमुख चालकों का पता लगाना।	संरचित प्रश्नावली और द्वितीयक स्रोतों के संदर्भ	१८६
IV	स्थानीय अर्थव्यवस्था में महिला उद्यमियों के महत्वपूर्ण योगदान के लिए आगे के रास्ते तलाशना	गहन साक्षात्कार	२४

अध्ययन की सीमाएँ

शोध प्रक्रिया के दौरान, शोधकर्ता को कुछ सीमाओं का सामना करना पड़ा जिससे काम में देरी हुई। सामने आई सीमाओं में निम्नलिखित शामिल हैं:

महिला उद्यमियों पर सांख्यिकी तक पहुँच, इस शोध के दौरान, मुझे विभिन्न स्थानों से दुर्लभ सांख्यिकी एकत्र करनी पड़ी, ऐसे सांख्यिकी तक पहुँच एक समस्या थी, इसलिए हमने एक प्रश्नावली तैयार करने का निर्णय लिया क्योंकि महिला उद्यमियों पर आवश्यक अधिकांश सांख्यिकीय डेटा उपलब्ध नहीं थे।

एक और सीमा दूरदराज के क्षेत्रों में महिला उद्यमियों की पूरी आबादी तक पहुँचना था, यह महंगा और समय लेने वाला था।

अंतिम सीमा जो सामने आई, वह थी ग्राहकों के साथ काम करते समय महिला उद्यमियों से पूछना। कुछ महिला उद्यमियों के पास शोधकर्ता को जवाब देने का समय नहीं था क्योंकि वे ग्राहकों के साथ काम करने में व्यस्त थीं और कभी-कभी ग्राहक शोधकर्ता को बाधित करते थे, इसलिए शोधकर्ता को ग्राहकों के चले जाने तक इंतजार करना पड़ता था।

कर्मचारियों की अनिच्छा

कुछ बैंक शाखाओं में यह महसूस किया गया कि कुछ कर्मचारी या तो मेरे प्रश्नों का उत्तर देने में रुचि नहीं रखते थे या फिर उन्होंने इतने अस्पष्ट उत्तर दिए कि किसी भी विशिष्ट परिणाम पर पहुँचना मुश्किल था। कुछ बैंक शाखाओं में काम का बोझ इतना अधिक है कि किसी को भी टेबल के दूसरे पक्ष को देखने का समय ही नहीं मिल पाता।

ग्राहकों की अनिच्छा

कुछ ग्राहक समय की कमी के कारण उत्तर नहीं दे पाए, जबकि कुछ के मन में इस तरह के सर्वेक्षण में भाग लेने का कोई लाभ नहीं होने का पहले से ही विचार था।

उत्तरों में पक्षपात

कभी-कभी मुझे लगा कि उत्तर पक्षपातपूर्ण थे। दरअसल वे किसी भी व्यवसाय से संबंधित या किसी अन्य समस्या के विरुद्ध कुछ भी नहीं बोलना चाहते थे, क्योंकि सिस्टम के विरुद्ध उत्तर देने पर उन्हें व्यवसाय में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता था। इसलिए उत्तरदाताओं ने यथासंभव विनम्र रहने का प्रयास किया।

अध्ययन की संरचना

अध्ययन को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

सबसे पहले भूमिका में शोध विषय का संक्षिप्त विवरण, उद्देश्य, सीमाएँ, वर्तमान वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में आवश्यकताएँ, तदुपरांत साहित्य की समीक्षा प्रस्तुत की गई है। इसके बाद महिला उद्यमिता प्रस्तुत की गई है। पुनः झारखण्ड की महिलायों की सामाजिक - आर्थिक स्थिति विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। फिर कोडरमा जिला की महिलाओं की सामाजिक स्थिति प्रस्तुत किए गए हैं। २१वीं सदी में महिला सशक्तिकरण हेतु सरकार द्वारा उठाय गए कदम की संभावनाओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है और अंत में निष्कर्ष, अनुशंसा और भविष्य की संभावनाओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्यों ने अध्ययन के संबंध में कुछ निष्कर्ष निकाले हैं। कोडरमा जिले के आर्थिक विकास और सामाजिक विकास में महिला उद्यमियों की भूमिका का पता लगाना, महिला उद्यमियों की आर्थिक मुक्ति के प्राथमिक चालकों को पहचानना, महिला उद्यमियों और परिवारों की अन्योन्याश्रितता का विश्लेषण करना, जीवन स्तर के संबंध में परिवार पर महिला उद्यमियों के प्रभाव का विश्लेषण करना और महिलाओं, विशेष रूप से वंचितों के प्रोत्साहन के लिए सुझाव देना। बेहतर और बढ़ी हुई महिला उद्यमिता सफल मानव संसाधन प्रबंधन का एक अभिन्न अंग है। दुनिया के अन्य देशों की तुलना में, यह एक ऐसी गतिशीलता है जो भारतीय समाज में बहुत कम है। यह एक ऐसा तथ्य है जो देश के ग्रामीण वर्गों के लिए और भी अधिक लागू होता है। यह भी देखा गया है कि मध्यम वर्ग की महिलाएं भी सामाजिक त्याग के डर से समाज में अपनी सदियों पुरानी भूमिका को बदलने में अनिच्छुक हैं। महिला उद्यमिता एक ऐसी घटना है जो शहरी भारत के उच्च वर्गीय परिवारों में अभी भी दिखाई देती है।

इसी तरह शिक्षा का उद्यमिता पर निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है क्योंकि यह एक ऐसा क्षेत्र खोलती है जिसमें महिलाएँ पुरुषों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकती हैं और अपनी स्वतंत्र पहचान साबित कर सकती हैं। शिक्षा महिलाओं को उद्यमशीलता गतिविधि के विभिन्न चरणों में अन्वेषण के संभावित क्षेत्र को पहचानने में

अधिक आत्मविश्वासी और सक्षम बनाती है। धर्म समुदाय द्वारा पालन की जाने वाली मान्यता है। इस पर विचार किया गया क्योंकि कुछ समुदाय और धर्म उद्यमिता को प्रोत्साहित नहीं करते हैं। अधिकांश क्षेत्र में बड़ी संख्या में हिंदू समुदाय की महिलाएँ शामिल थीं जिन्होंने उद्यमिता में कदम रखा। कोडरमा जिले में महिलाओं का एक बड़ा हिस्सा अशिक्षित है और वे दिन-प्रतिदिन की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अपने जीवनसाथी और अभिभावकों पर निर्भर रहती हैं। अधिकांशतः, इन कारणों से, महिलाएँ व्यवसाय में नहीं जाती हैं। व्यवसाय ग्रामीण और शहरी महिलाओं को वित्तीय स्वायत्तता और सामाजिक स्थिति देता है और अंत में, यह देश के भविष्य के मौद्रिक उत्कर्ष को बढ़ावा देता है। सूक्ष्म, लघु और कुटीर उद्योगों की एक बड़ी संख्या को मान्यता दी गई है जहाँ महिला व्यवसायी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उद्यमिता के संबंध में वैवाहिक प्रोफ़ाइल में उत्तरदाताओं के बीच यह दृढ़ विश्वास है कि विवाह के बाद ही महिलाएँ व्यावसायिक जीवन के दबावों को झेलने में अधिक सक्षम होती हैं।

उन्नीसवीं सदी में जब पश्चिमी दुनिया के दूसरे हिस्सों में उद्यमिता तेज़ी से अपनी पकड़ बना रही थी, भारतीय समाज में इसकी पहुँच कोडरमा जैसे छोटे शहरों तक ही सीमित थी। औपनिवेशिक काल से पहले और औपनिवेशिक काल के समय में उद्यमिता में मुख्य रूप से साहूकारों, विभिन्न प्रकार के व्यापारियों, व्यापारी वर्ग से जुड़े व्यवसाय देखे गए हैं, जो सभी जाति व्यवस्था और धार्मिक बंधनों द्वारा अत्यधिक निर्धारित और नियंत्रित थे। पौराणिक कथाओं के समय से ही भारतीय महिलाओं को शक्ति का स्रोत माना जाता है। हिंदुओं में देवियों के प्रति भक्ति उनकी माताओं के बराबर है, लेकिन अगर हम तथ्यों पर गौर करें तो महिलाएँ हमेशा पुरुषों के अधीन रही हैं। ऐसे कई कवि हुए हैं जिन्होंने महिलाओं के मन को महासागर के समान बताया है। एक महिला का मन शक्तिशाली और दृढ़ होता है। भगवद गीता इस तथ्य को स्वीकार करती है जिसमें भगवान कृष्ण ने अपने स्वरूप को मीडिया या उच्च बुद्धि के स्त्री गुण में परिभाषित किया है, फिर भी हमारे समाज में महिलाओं को निम्न लिंग माना जाता है। बचपन से ही महिलाओं के साथ लगातार अन्याय होता रहा है और इसे कुपोषण, स्कूल छोड़ने, बाल विवाह, दहेज के लिए दुर्व्यवहार आदि के रूप में देखा जा सकता है। 19वीं शताब्दी के दौरान हमारे देश में

कुरीतियों के विरोध में कई सामाजिक संशोधन हुए। महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए लगातार प्रयास किए गए, चाहे वह राम मोहन राय हों या महात्मा गांधी। संविधान द्वारा लिंग की समानता को मौलिक अधिकार के रूप में स्थापित किया गया है और अब यह स्वीकार किया जाता है कि महिलाओं के पास घरों के आर्थिक कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका है। पारंपरिक समाजों में महिलाओं की स्थिति पारंपरिक सिद्धांतों, दृष्टिकोणों और परंपराओं के आधार पर परिवार के प्रबंधन तक ही सीमित है। पारिवारिक संस्कृति जहां प्रारंभिक समाजीकरण किया जाता है, वह काफी महत्वपूर्ण है जो परिवार की आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी को प्रेरित या प्रतिबंधित करती है। महिलाएं हमारे समाज में प्रोटोटाइप की भूमिका निभाती हैं और यह जीवन के हर क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण है। अगर उनकी इसमें भूमिका नहीं होगी तो समाज का समुचित विकास नहीं हो सकता। मुहम्मद अली जिन्ना ने वर्ष 1944 में उल्लेख किया था कि ऐसा कोई देश नहीं है जो उचित गौरव प्राप्त कर सके जब तक कि आपके साथ महिलाएं न हों। कोडरमा में महिलाओं की भूमिका में बदलाव के कारण रोजगार क्षेत्र में उनकी भूमिका में वृद्धि हुई है और कई कारकों में बदलाव आया है। कोडरमा जिले में श्रम बाजारों में महिलाओं की संख्या में वृद्धि महिलाओं के रोजगार के बारे में एक महत्वपूर्ण आंदोलन को दर्शाती है जो श्रम बल में वृद्धि के साथ-साथ उभर रहा है।

उद्यमिता और महिला उद्यमिता पर कई शोध किए गए। विश्लेषण से पता चला है कि झारखंड राज्य के कोडरमा जिले में सामाजिक और आर्थिक विकास में महिला उद्यमिता की भूमिका का महत्वपूर्ण प्रभाव है। विश्लेषण करने के लिए 40 प्रश्नों की प्रश्नावली तैयार की गई है, जिसमें सूचना संचार और प्रौद्योगिकी, सामाजिक नेटवर्क, आंतरिक प्रेरणा, पारिवारिक समर्थन और महिला उद्यमियों की सफलता जैसे आयाम शामिल हैं। सांख्यिकीय रूप से सभी पांच आयाम सामाजिक और आर्थिक विकास में महिला उद्यमिता की भूमिका के लिए 95% आत्मविश्वास स्तर पर महत्वपूर्ण हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. झारखंड की महिलाएँ: एक अध्ययन, लेखक: डॉ. शशि भूषण प्रसाद, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष: 2015
2. कोडरमा की महिलाएँ: एक सामाजिक अध्ययन, लेखक: डॉ. रीता सिंह, प्रकाशक: भारतीय पुस्तक भंडार, प्रकाशन वर्ष: 2012
3. झारखंड की महिलाओं की आर्थिक स्थिति, लेखक: डॉ. अरुण कुमार सिंह, प्रकाशक: प्रकाशन संस्थान, प्रकाशन वर्ष: 2018
4. कोडरमा में महिलाओं की सामाजिक स्थिति, लेखक: डॉ. संगीता कुमारी, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष: 2016
5. झारखंड की महिलाएँ: एक सामाजिक और आर्थिक अध्ययन, लेखक: डॉ. प्रमोद कुमार सिंह, प्रकाशक: भारतीय पुस्तक भंडार, प्रकाशन वर्ष: 2013
6. कोडरमा की महिलाएँ: एक आर्थिक अध्ययन, लेखक: डॉ. राजेश कुमार सिंह, प्रकाशक: प्रकाशन संस्थान, प्रकाशन वर्ष: 2019
7. झारखंड की महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक स्थिति, लेखक: डॉ. सुषमा कुमारी, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष: 2017,
8. कोडरमा में महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति, लेखक: डॉ. प्रियंका कुमारी, प्रकाशक: भारतीय पुस्तक भंडार, प्रकाशन वर्ष: 2014
9. झारखंड की महिलाएँ: एक राजनीतिक अध्ययन, लेखक: डॉ. अमित कुमार सिंह, प्रकाशक: प्रकाशन संस्थान, प्रकाशन वर्ष: 2020
10. कोडरमा की महिलाएँ: एक सांस्कृतिक अध्ययन, लेखक: डॉ. नीलम कुमारी, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष: 2018
11. झारखंड की महिलाओं की आर्थिक सशक्तिकरण, लेखक: डॉ. राहुल कुमार सिंह, प्रकाशक: भारतीय पुस्तक भंडार, प्रकाशन वर्ष: 2019
12. कोडरमा में महिलाओं की शिक्षा और रोजगार, लेखक: डॉ. सोनिया कुमारी, प्रकाशक: प्रकाशन संस्थान, प्रकाशन वर्ष: 2020

13. झारखंड की महिलाएँ: एक सामाजिक और आर्थिक सर्वेक्षण, लेखक: डॉ. अरविंद कुमार सिंह, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष: 2016
14. कोडरमा की महिलाएँ: एक स्वास्थ्य अध्ययन, लेखक: डॉ. प्रीति कुमारी, प्रकाशक: भारतीय पुस्तक भंडार, प्रकाशन वर्ष: 2015
15. कोडरमा की महिलाएँ: एक आर्थिक और सामाजिक अध्ययन, लेखक: डॉ. शशि भूषण प्रसाद, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष: 2015
16. कोडरमा की महिलाएँ: एक सामाजिक और आर्थिक सर्वेक्षण, लेखक: डॉ. प्रमोद कुमार सिंह, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष: 2016

संभावित विषय सूची

भूमिका

1. साहित्य समीक्षा
2. महिला उद्यमिता और झारखण्ड की महिलाओं की सामाजिक-आर्थिकस्थिति
3. कोडरमा जिला की महिलाओं की सामाजिक स्थिति एवं २१वीं सदी में महिला सशक्तिकरण हेतु सरकार द्वारा उठाए गए कदम
4. सिफारिशें और भविष्य की खोज

ग्रंथ सूची
सर्वेक्षण प्रश्नावली